Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

M.E.C. -2

समष्टिगत आर्थिक विश्लेषण

(Macro Economic Analysis)

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Namrata Gupta,* M.Com.

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

समष्टिगत आर्थिक विश्लेषण

(Macro Economic Analysis)

Question Paper—June-2023 (Solved) 1-2
Question Paper—December-2022 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1-2
Question Paper—June, 2019 (Solved) 1
Question Paper—December, 2018 (Solved) 1-2
Question Paper—June, 2018 (Solved) 1
Question Paper—December, 2017 (Solved) 1-2
Question Paper—June, 2017 (Solved) 1-2

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

समष्टिगत अर्थशास्त्र की परंपरागत विचारधाराएँ

(Traditional Ideologies of Macro Economics)

1. क्लासिकीय और केंसीय विचारधाराएँ (Classical and Keynesian Ideologies) 1
2. नव-क्लासिकीय संश्लेषण (Neo-Classical Synthesis) 12

आर्थिक संवृद्धि (Economic Growth)

3. सोलो मॉडल (Solo Model) 21
4. अंतर्जात संवृद्धि मॉडल (Endogenous Growth Model) 29

विवेकपूर्ण प्रत्याशाएँ (Discretionary Expectations)

5. विवेकपूर्ण प्रत्याशाएँ और आर्थिक सिद्धान्त 37
   (Discretionary Expectations and Economic Theory)
6. अनिश्चितता में नीति-निर्माण (Policy Planning under Uncertainity) 45

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

अंतर्कालिक निर्णय-प्रक्रिया (Provisional Decision Process)

7. उपभोग एवं परिसंपत्ति कीमतें (Consumption and Assests Pricing) 51
8. रैमसे मॉडल (Ramsey Model) 61
9. परस्परव्यापी पीढ़ी मॉडल (Overlapping Generation Model) 68
10. मुद्रा और मौद्रिक नीति की भूमिका (Money and Role of Monetary Policy) 75

आर्थिक उतार-चढ़ाव (Economic Fluctuations)

11. व्यवसाय चक्र के परम्परागत सिद्धांत (Sequential Theories of Business Cycle) 84
12. वास्तविक व्यवसाय चक्र (Real Business Cycle) 91

बेरोजगारी (Unemployment)

13. परम्परागत सिद्धांत (Sequential Theory) 98
14. सर्च सिद्धान्त और बेरोजगारी (Search Theory and Unemployment) 109
15. मौद्रिक एवं वास्तविक जड़ताएँ (Monetary and Real Rigidities) 118
16. बेरोजगारी के नए केंसीय सिद्धांत (New Kensian Theories of Unemployment) 124

खुली अर्थव्यवस्था में समष्टिगत मॉडलिंग (Macro Modelling in Open Economy)

17. लोचशील विनियम दर प्रणाली (Flexible Exchange Rate System) 129
18. स्थिर विनिमय दर व्यवस्था (Pagged Exchange Rate System) 137
19. मंद कीमत समायोजन (Stagnant Price Adjustment) 143

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

समष्टिगत आर्थिक विश्लेषण

(Macro Economic Analysis)

M.E.C.-2

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *निर्देशानुसार दोनों भागों से प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

भाग-अ

नोट : इस भाग से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1. सोलो मॉडल में स्थिर अवस्था की शर्त की व्युत्पत्ति कीजिए। स्थिर अवस्था शर्त की विवेचना के लिए उपयुक्त चित्र का प्रयोग कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-22, 'सुस्थिर अवस्था'

प्रश्न 2. लचीली (नम्य) विनिमय दर वाली अर्थव्यवस्था के लिए मौद्रिक नीति और राजकोषीय नीति की प्रभावशीलता की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-19, पृष्ठ-146-147, 'लोचशील विनिमय दर के अन्तर्गत आन्तरिक एवं बाह्य संतुलन'

प्रश्न 3. एक अर्थव्यवस्था के लिए IS वक्र की व्युत्पत्ति कीजिए। IS वक्र के बाहर कोई बिन्दु क्या दर्शाता है? IS वक्र के आकार को प्रभावित करने वाले कारक क्या हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-14, 'वास्तविक क्षेत्र में संतुलन : IS वक्र', पृष्ठ-17, प्रश्न 3

प्रश्न 4. मुद्रास्फीति और बेरोजगार में संबंध स्थापित कीजिए। ऐसा क्यों है कि यह संबंध दीर्घकाल में नहीं रह सकता?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-105, प्रश्न-3 तथा पृष्ठ-106, प्रश्न-4

भाग-ब

नोट : इस भाग से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 5. तरलता जाल से क्या अभिप्राय है? तरलता जाल की उपस्थिति में मौद्रिक नीति अप्रभावी क्यों है?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-17, प्रश्न-2

प्रश्न 6. मेनू लागत की अवधारणा की व्याख्या कीजिए। इसे समष्टि अर्थशास्त्र में महत्त्वपूर्ण क्यों माना जाता है?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-15, पृष्ठ-122, प्रश्न-5

प्रश्न 7. समष्टि अर्थशास्त्र में व्यष्टि-मूलों के महत्त्व की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-46, 'लुकास की समीक्षा का महत्त्व', 'लघु आधार', पृष्ठ-48, प्रश्न-4

प्रश्न 8. अंतर्जात संवृद्धि से क्या अभिप्राय है? अंतर्जात संवृद्धि के एक मॉडल की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-31, 'अन्तर्जात संवृद्धि सिद्धान्त', 'मूलभूत AK मॉडल'

प्रश्न 9. आर्थिक संवृद्धि के स्वर्णिम नियम का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-24, 'स्वर्णिम नियम'

प्रश्न 10. 'कुशलता मजदूरी सिद्धांत' की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-16, पृष्ठ-125, 'दक्षता मजदूरी मॉडल : एक उदाहरण'

प्रश्न 11. वास्तविक व्यापार चक्र पर एक संक्षिप्त नोट लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-91, 'वास्तविक व्यवसाय चक्र सिद्धान्त'

प्रश्न 12. निम्नलिखित पर संक्षेप टिप्पणी लिखिए–

(क) पारंपरिक द्वैतवाद

उत्तर–क्लासिकी द्विभाजन एक विचार है, जो कि वास्तविक और नाममात्र चर का अलग-अलग विश्लेषण किया जा सकता है सही होने के लिये, जो अर्थव्यवस्था की शास्त्रीय द्वंद्वात्मकता को

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

प्रदर्शित करती है। यदि वास्तविक चर, जैसे–अपादान और वास्तविक ब्याज दरों का पूरी तरह से विश्लेषण करती है। बिना किसी विचार किये कि उनके समकक्षों–उत्पादन के धन मूल्य और ब्याज दर पर क्या प्रभाव हो रहा है। विशेष रूप से इसका मतलब यह है कि वास्तविक जी.डी.पी. और अन्य वास्तविक चर नाममात्र मूल्य की आपूर्ति या मुद्रा स्फीति की दर के स्तर को जाने बिना ही निर्धारित किया जा सकता है। यह दर्शाता है कि यह एक अर्थव्यवस्था की राष्ट्रीय द्वंद्वात्मकता का प्रदर्शन करता है, यदि मूल्य तटस्थ है, तो केवल मूल्य स्तर को प्रभावित करता है। वास्तविक चर को नहीं।

शास्त्रीय समष्टिगत आर्थिक विशेषण में एक लघु फिलिप्स वक्र है, जो लागतार की जा रही समीक्षा की तर्कसंगत अपेक्षाओं के अनुसार लम्बवत स्थांनातरित हो सकता है। सीधे शब्दों में मूल्य अल्पकाल में तटस्थ नहीं होता है अर्थात् क्लासिकी द्विभाजन से यह ज्ञात नहीं हो पाता है, कि कोई व्यक्ति अपने आपूर्ति निर्णयों को बदलने के माध्यम से कीमतों में और मूल्य की मात्रा में परिवर्तन का जवाब दे सकें। हालांकि लम्बे समय में मूल्य तटस्य होना चाहिये और द्विभाजन को लम्बे समय तक होना चाहिये, क्योंकि डेटा स्तर पर कीमतों और वास्तविक व्यापक आर्थिक प्रदर्शन के बीच कोई सम्बन्ध नहीं था।

(ख) बेरोजगारी का आंतरिक-बाहरी मॉडल

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-16, पृष्ठ-128, प्रश्न-9

■■

NEERAJ
PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

समष्टिगत आर्थिक विश्लेषण

(MACRO ECONOMIC ANALYSIS)

समष्टिगत अर्थशास्त्र की परंपरागत विचारधाराएँ
(Traditional Ideologies of Macro Economics)

क्लासिकीय और केंसीय विचारधाराएँ
(Classical and Keynesian Ideologies)

1

परिचय

1936 ई. में प्रकाशित जॉन मेनार्ड केंस की पुस्तक '*द जनरल थ्योरी ऑफ एम्प्लायमेंट, इन्टरेस्ट एंड मनी* (The General Theory of Employment, Interest and Money) से पहले अर्थशास्त्र का अध्ययन राष्ट्रीय आय के वितरण तथा कीमत के निर्धारण जैसी आर्थिक समस्याओं तक सीमित था। निर्धनता, बेरोजगारी, पूँजी-निवेश, आर्थिक संवृद्धि तथा मुद्रा-स्फीति जैसे मुद्दों पर अर्थशास्त्र की विषयवस्तु के अन्तर्गत विचार नहीं होता था। 1929-33 की विश्वव्यापी मंदी के दौरान क्लासिकीय अर्थशास्त्रियों की पूर्ण रोजगार की अवधारणा विफल साबित हुई तथा मंदी के दौर से राहत पाने के लिए नए आर्थिक विश्लेषण की आवश्यकता महसूस की जाने लगी, तभी केंस ने नया आर्थिक विश्लेषण प्रस्तुत किया। केंस के अनुसार, स्वतंत्र अर्थव्यवस्था में साधनों का पूर्ण तथा इष्टतम प्रयोग एवं बेरोजगारी की स्थिति में स्वत: सुधार के बाद पूर्ण रोजगार के स्तर को प्राप्त करने की प्रवृत्ति जैसी कोई चीज नहीं होती। केंस ने लोगों को रोजगार तथा आय के साधन उपलब्ध करवाने के लिए सरकार की ओर से उत्पादन तथा निवेश की आवश्यकता पर बल दिया। यही नया आर्थिक विश्लेषण समष्टि अर्थशास्त्र की विषयवस्तु है। समष्टिगत अर्थशास्त्र में बेरोजगारी, गरीबी, आर्थिक विकास, सामान्य कीमत स्तर, निवेश, राष्ट्रीय आय जैसे चरों (variables) का अध्ययन किया जाता है। इस अध्याय में क्लासिकीय अर्थशास्त्रियों की अवधारणा के साथ-साथ केंस के विचारों की भी चर्चा की गई है।

अध्याय का विहंगावलोकन

कुछ अवधारणाएँ

समग्र आपूर्ति

किसी देश की अर्थव्यवस्था में विभिन्न फर्मों द्वारा उत्पादित उत्पाद की मात्रा ही उसकी समग्र आपूर्ति होती है। अत: समग्र आपूर्ति का अर्थ है उत्पादन इकाइयों से प्राप्त उत्पाद की कुल मात्रा। ऐसे दो कारक हैं जिन पर समग्र उत्पाद' निर्भर करता है *(i)* आगतों का स्तर एवं *(ii)* तकनीकी का स्तर। आगत से अभिप्राय उत्पादन के कारकों से है, जिनके प्रयोग से उत्पादन संभव होता है। ये कारक हैं श्रम (L) तथा पूँजी (K)। इन आगतों में से श्रम की उपलब्धि गृहस्थों द्वारा होती है, जबकि उत्पादन में प्रयुक्त होने वाले तथा बाजार में उपलब्ध उपकरण तथा संरचना का स्टॉक पूँजी कहलाता है। अर्थव्यवस्था में पूँजी आगत के स्तर को बढ़ाने के लिए 'निवेश' का प्रयोग किया जाता है। आगतों की मात्रा बढ़ने से उत्पाद की मात्रा में वृद्धि होती है तथा समग्र आपूर्ति का परिमाण उत्पाद का परिणाम बढ़ने से बढ़ता है। इस प्रकार आगतों तथा उत्पाद के मध्य एक तकनीकी संबंध होता है, जिसे उत्पादन फलन कहते हैं।

समग्र पूर्ति वक्र अल्पकाल तथा दीर्घकाल में अलग-अलग होता है, क्योंकि आगतों के स्तर से ही उत्पादन का स्तर तथा पूर्ति निर्धारित होती है। प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों अथवा क्लासिकीय चिंतकों के अनुसार अर्थव्यवस्था में सदैव पूर्ण रोजगार की स्थिति होती है, अत: उनके अनुसार समग्र पूर्ति वक्र (AS) ऊर्ध्वाधर होता है। परन्तु

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

केंस ने समग्र आपूर्ति वक्र (Aggregate Supply Curve, AS) को कीमत (Price) के सापेक्ष ऊपर की ओर उठते हुए दिखाया है।

श्रम की आपूर्ति और माँग

श्रम की आपूर्ति प्रचलित मजदूरी दर पर निर्भर करती है। मजदूरी की दर कम होने पर फर्मों द्वारा श्रम की माँग बढ़ जाती है, परन्तु उसकी पूर्ति कम हो जाती है। परन्तु मजदूरी की दर अधिक होने पर स्थिति ठीक इसके विपरीत होती है। यहाँ बेरोजगारी से तात्पर्य 'अनैच्छिक बेरोजगारी' है, 'ऐच्छिक बेरोजगारी' नहीं। कार्यरत लोगों एवं बेरोजगार लोगों का योग होता है, श्रम शक्ति। श्रम की आपूर्ति तथा माँग को एक रेखाचित्र द्वारा दर्शाने पर आपूर्ति वक्र (L_s) मजदूरी दर के सापेक्ष बाएं से दाएं ऊपर की ओर उठता है तथा श्रम की माँग का वक्र नीचे की ओर झुकता है। मजदूरी की दर को नकद अथवा वास्तविक इकाइयों में व्यक्त किया जाता है। मौद्रिक इकाइयों में परिकलित की जाने वाली मजदूरी (W) नकद मजदूरी कहलाती है तथा कीमत परिवर्तन के अनुसार समायोजित मजदूरी, वास्तविक मजदूरी $\left(\frac{W}{P}\right)$ होती है। अत: मजदूरी न बढ़ने तथा कीमत स्तर (P) में वृद्धि हो जाने पर वास्तविक मजदूरी दर में कमी हो जाती है।

समग्र माँग

किसी देश की अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत उपभोग, निवेश तथा सरकारी उपयोग के लिए प्रयोग होने वाली वस्तुओं तथा सेवाओं की माँग की कुल मात्रा समग्र माँग कहलाती है। समग्र माँग के चार घटक निम्नलिखित हैं–

(1) उपभोग व्यय, (2) निवेश व्यय, (3) सरकारी व्यय तथा (4) निवल निर्यात। इसका सांकेतिक रूप है

$$Q^D = C + I + G + (X - M)$$

जहाँ, Q^D = समग्र माँग

C = उपभोग व्यय

I = निवेश

G = सरकारी व्यय

X = निर्यात,

M = आयात

(X – M) = निवल निर्यात

एक बन्द अर्थव्यवस्था में, X तथा M वहाँ शून्य होते हैं, जहाँ कोई विदेशी व्यापार नहीं होता है। कीमत तथा समग्र माँग वक्र के बीच विपरीत फलन होने के कारण समग्र माँग वक्र (AD) नीचे की ओर झुकता है।

संतुलन उत्पाद और कीमत

समग्र आपूर्ति वक्र ऊपर की ओर उठता है तथा समग्र माँग वक्र नीचे की ओर, अत: समग्र माँग वक्र (AD) तथा समग्र आपूर्ति वक्र (AS) में विचलन की प्रवृत्ति एक दूसरे के विपरीत होती है। वक्रों के प्रतिच्छेदन बिन्दु पर संतुलन स्थापित होने के कारण कीमत का निर्धारण होता है। प्रदत्त आरेख द्वारा इसे उचित रूप से समझा जा सकता है

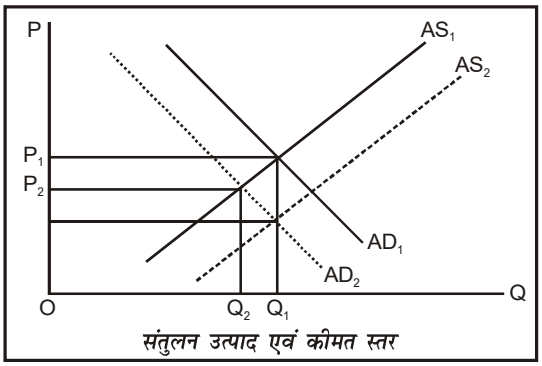

संतुलन उत्पाद एवं कीमत स्तर

प्रस्तुत आरेख में समग्र माँग वक्र (AD) तथा समग्र पूर्ति वक्र (AS) एक दूसरे को जहाँ प्रतिच्छेदन करते हैं वहाँ OP कीमत प्राप्त होती है। OQ इस कीमत पर माँग तथा पूर्ति की मात्रा है। अन्य शब्दों में, कुल रोजगार की मात्र कुल उत्पादन के अनुरूप है अर्थात OQ पूर्ण रोजगार का स्तर है। समग्र माँग घट जाने पर माँग वक्र घटकर AD हो जाता है, तो कीमत भी OP से घटकर OP′ हो जाएगी, जहाँ उत्पाद का स्तर Q_2 होगा। समग्र माँग में कमी आने से उत्पादन कम हो जाएगा जिससे बेरोजगारी बढ़ेगी, मजदूरी दर घटेगी तथा उत्पादन लागत कम हो जाएगी। इस प्रकार कीमत स्तर घट जाने से समग्र पूर्ति वक्र भी नीचे की ओर खिसककर AS हो जाएगा। पुन: पूर्ण रोजगार की स्थिति न आने तक मजदूरी दर में कमी की प्रक्रिया जारी रहेगी, परन्तु ऐसा केवल दीर्घकाल में संभव है, अल्पकाल में नहीं।

समग्र उत्पाद की माप

उत्पादित वस्तुओं तथा सेवाओं की कुल मात्रा समग्र उत्पाद कहलाती है। समग्र उत्पाद का माप, वर्तमान कीमत स्तर तथा स्थिर कीमत स्तर द्वारा लिया जाता है। समग्र उत्पाद को सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product–GDP) के नाम से भी जाना जाता है। अर्थव्यवस्था में समग्र उत्पाद (Q) को स्थिर कीमतों (GDP) द्वारा व्यक्त किया जाता है तथा बाजार कीमतों पर GDP को $P \times Q$ द्वारा दर्शाया जाता है। GDP को मापने की तीन विधियां हैं

(i) अंतिम उत्पाद (Q) का योग

(ii) साधन आय (Y) का योग

(iii) अंतिम व्यय (E) का योग।

ये तीनों ही गणनाएँ समान मूल्य की होती हैं, अर्थात इसमें सकल घरेलू उत्पाद की कीमत एकसमान रहती है। इस विधि को मापने की विधियों को *(i)* उत्पादन विधि; *(ii)* आय विधि तथा *(iii)* व्यय विधि भी कहा जाता है।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

***(i)* उत्पादन विधि या अंतिम व्यय (E) का योग**

सकल घरेलू उत्पाद (GDP) = अन्तिम वस्तु की कुल उत्पादित मात्रा × प्रति इकाई कीमत।

***(ii)* व्यय विधि या साधन आय (Y) का योग**

सकल घरेलू उत्पाद (GDP) = कर्मचारियों का वेतन व मजदूरी या प्रतिफल + सामाजिक सुरक्षा स्कीमों में नियोक्ताओं का अंशदान + किराया + ब्याज + निवल लाभ + लाभांश + स्वरोजगार करने वाले लोगों की मिश्रित आय

***(iii)* व्यय विधि या अंतिम व्यय (E) का योग**

सकल घरेलू उत्पादन (GDP) = निजी उपभोज्य व्यय + निजी निवेश + सरकारी व्यय + सकल घरेलू उत्पाद + विदेशों से प्राप्त निवल साधन आय = सकल राष्ट्रीय उत्पाद - मूल्य ह्रास = निवल राष्ट्रीय उत्पाद + उपदान - अप्रत्यक्ष कर = साधन लागत पर राष्ट्रीय आय।

उपभोज्य आय = व्यक्तिगत आय - व्यक्तिगत कर (आयकर)
उपभोज्य आय = उपभोग + बचत

व्यक्तिगत आय = राष्ट्रीय आय सामाजिक सुरक्षा अंशदान कम्पनियों का अवितरित लाभ कंपनियों की पूँजी पर लगा कर + हस्तांतरित भुगतान

आय का चक्रीय प्रवाह

आय के चक्रीय प्रवाह का अर्थ है वह प्रक्रिया जिसके द्वारा अर्थव्यवस्था की राष्ट्रीय आय चक्रीय रूप में समय के साथ निरन्तर प्रवाहित होती रहती है। राष्ट्रीय आय तथा व्यय के विविध संघटकों को, जैसे बचत, निवेश, कराधान, सरकारी व्यय, निर्यात, आयात इत्यादि को रेखाचित्रों में धाराओं एवं विपरीत धाराओं के रूप में ऐसे ढंग से दिखाया जाता है कि राष्ट्रीय आय तथा व्यय बराबर रहे। इस आय का प्रयोग तीन प्रकार से किया जाता है- *(i)* सरकार को कर चुकाने में, *(ii)* वस्तुओं तथा सेवाओं के उपभोग पर तथा *(iii)* वित्तीय बाजारों के माध्यम से बचत करने में। किसी बंद अर्थव्यवस्था में आर्थिक एजेंटों की चक्रीय प्रवाह में महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। अर्थव्यवस्था में मुख्यत: तीन आर्थिक एजेंट होते हैं गृहस्थ, फर्म एवं सरकार। गृहस्थ को अपने श्रम तथा पूँजीगत आगत साधनों को बाजार में बेचकर आय प्राप्त करनी होती है। यदि सरकार के क्रय निवल करों से बढ़ जाते हैं तो सरकार को दोनों के अन्तर अर्थात सरकार के व्यय तथा करों के अन्तर के बराबर घाटा होगा। सरकार अपने घाटे के लिए पूँजी बाजार से उधार लेकर वित्त की व्यवस्था करती है तथा पूँजी बाजार को परिवारों से बचत के रूप में कोषों की प्राप्ति होती है। दूसरी ओर, यदि निवल कर सरकारी खरीदारी से बढ़ जाते हैं, तो सरकार का अधिशेष (Surplus) का बजट होगा। ऐसी स्थिति में सरकार सार्वजनिक ऋण को कम करती है तथा पूँजी बाजारों को कोष प्रदान करती है, जिन्हें फर्में प्राप्त करती हैं। फर्मों की भी अपनी पूँजी होती है, वे भी निवेश करती हैं तथा सरकार को कर देती हैं। सरकार द्वारा गृहस्थों को मुद्रा का हस्तांरण सामाजिक सुरक्षा के उपायों के रूप में किया जाता है।

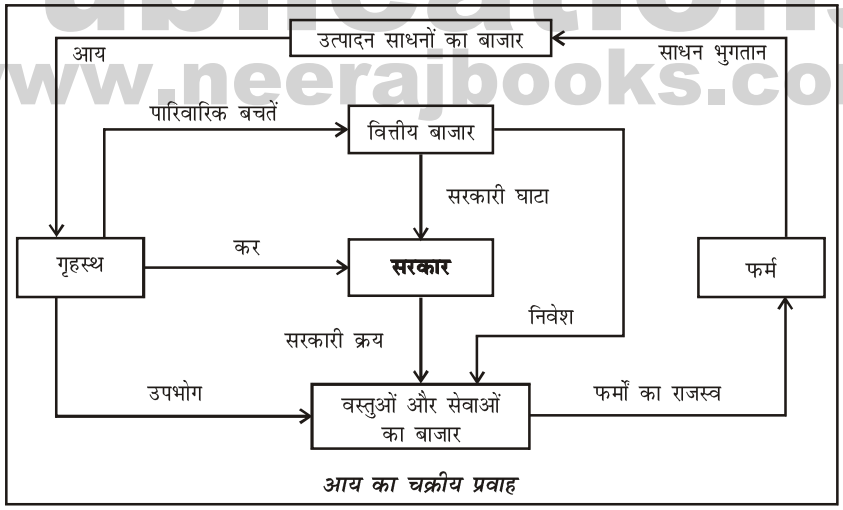

आय का चक्रीय प्रवाह

विचारों के विभिन्न संप्रदाय

विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रस्तुत किए गए आर्थिक दृष्टिकोणों एवं विचारों को प्रकृतिवादी, वाणिज्यवादी आदि विचारधाराओं के नाम से जाना जाता है। एडम स्मिथ, रिकार्डो, माल्थस तथा जे.एस. मिल को अर्थशास्त्र के शास्त्रीय अध्ययन तथा आर्थिक सिद्धांतों के प्रतिपादन का श्रेय दिया जाता है। इनके विचार राष्ट्रीय आय, उत्पादन के साधनों के बीच वितरण, रोजगार आदि से संबंधित हैं। विभिन्न विद्वानों के विचारों के आधार पर दो संप्रदाय महत्त्वपूर्ण हैं क्लासिकीय तथा केंसीय विचारधाराएँ। इस प्रकार कतिपय विद्वानों के आर्थिक विचारों संबंधी मतों को दो भागों में बाँटकर

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

इनका अध्ययन किया जाता है। एडम स्मिथ, माल्थस, जे.एस. मिल आदि विद्वानों के आर्थिक विचारों का दृष्टिकोण सबसे पुराना है। इनकी गणना प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों में तथा इनके सिद्धांतों की प्रतिष्ठित सिद्धांतों में की जाती है। राष्ट्रीय आय, रोजगार, कीमत निर्धारण आदि समष्टिपरक विषयों के लिए इन अर्थशास्त्रियों का दृष्टिकोण व्यष्टिपरक था। इन्होंने जे.बी. से के बाजार नियम के आधार पर अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार की परिकल्पना प्रस्तुत की है। परवर्ती अर्थशास्त्रियों में जे.एस. केंस का नाम प्रमुख है, जिनकी धारणाओं को केंसीय विचारधारा के नाम से जाना जाता है। केंसीय विचारधाराओं के अर्थशास्त्री तीन बातों पर भिन्न मत रखते हैं

1. उत्पाद, रोजगार तथा कीमतों के निर्धारण में माँग तथा पूर्ति की सापेक्ष भूमिकाएँ।
2. कीमत और मजदूरी के निर्धारण में लोचशीलता।
3. वास्तविक क्षेत्र तथा मौद्रिक क्षेत्र में द्विभागीकरण।

प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों के सिद्धांत जे.बी. से की उस धारणा की पुष्टि करते हैं जिसके अनुसार अर्थव्यवस्था में पूर्ति अपनी माँग का सृजन स्वयं करती है, जिसका अर्थ है कि अर्थव्यवथा में बेरोजगारी की स्थिति उत्पन्न होने पर स्वयंमेव सुधार की प्रक्रिया शुरू हो जाती है तथा यह प्रक्रिया तब तक जारी रहती है जब तक पूर्ण रोजगार का स्तर प्राप्त नहीं हो जाता। केंसीय विचारधारा के अनुसार, जब तक अर्थव्यवस्था में बेरोजगारी विद्यमान रहती है, माँग अपनी आपूर्ति स्वयं उत्पन्न करती है। क्लासिकीय अर्थशास्त्र का विश्वास मुक्त व्यापार में था तथा वह आर्थिक क्रियाओं में न्यूनतम सरकारी हस्तक्षेप का पक्षधर था। कई प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री Laissez-faire (हमें अकेला छोड़ दो) सिद्धान्त के अनुपालक थे, जिसका अर्थ था कि सरकार का आर्थिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए। उनके अनुसार बाजार की शक्तियाँ, जैसे माँग तथा पूर्ति निरन्तर कार्यरत रहती हैं तथा कीमत के निर्धारण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। क्लासिकीय अर्थशास्त्रियों का मत था कि समग्र आपूर्ति वक्र ऊर्ध्वाधर होता है, अत: उत्पाद तथा रोजगार के संतुलन स्तर में कोई परिवर्तन नहीं आता।

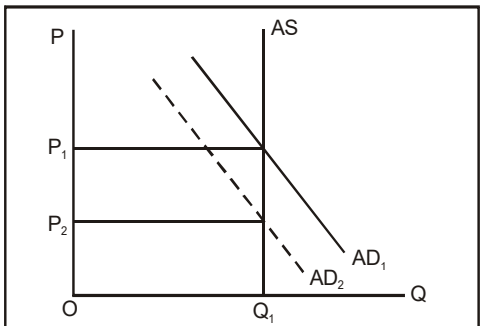

उत्पाद और कीमत निर्धारण की क्लासिकीय विचारधारा

प्रस्तुत रेखाचित्र में समग्र माँग में कमी के कारण जब माँग वक्र AD से सरक कर AD′ हो जाता है तो कीमत भी OP′ से सरक कर OP′ हो जाता है। इस तरह मजदूरी दर में कमी होती है, जिससे पूर्ण रोजगार का स्तर बना रहता है। सन 1929 की महामंदी के दौरान क्लासिकीय अर्थशास्त्रियों की अवधारणाओं से लोगों का विश्वास उठ गया, क्योंकि यह सिद्धांत महामंदी से उबारने में विफल रहा। इसी मंदी के समय केंसीय अर्थशास्त्र का जन्म हुआ। केंस के अनुसार, मंदी का मुख्य कारण था, माँग में कमी तथा बेरोजगारी के कारण आय में हुई कमी से उत्पन्न हुई है। अत: उन्होंने माँग बढ़ाने के लिए अर्थव्यवस्था में रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाने का सुझाव दिया।

केंस के अनुसार, अल्पकाल में कभी भी समग्र पूर्ति वक्र ऊर्ध्वाधर नहीं होगा, क्योंकि इस दौरान कीमत तथा मजदूरी में जड़ता पाई जाती है। अर्थात उनमें जैसा है वैसा ही बने रहने की प्रवृत्ति होती है। इस तरह माँग में कमी के मुताबिक अल्पकाल में समग्र पूर्ति वक्र क्षैतिज तल पर या ऊपर की ओर उठा हुआ होता है, जबकि दीर्घकाल में ऊर्ध्वाधर होता है। अत: क्लासिकीय मॉडल दीर्घकाल में व्याख्या करते हैं, जबकि केंसवादी मॉडल अल्पकाल में व्याख्या करते हैं।

केंस का समष्टिपरक आर्थिक मॉडल भी आलोचनाओं से घिरा हुआ था। हिक्स, सैम्युल्सन जैसे अर्थशास्त्रियों ने केंस की रूढ़िगत धारणाओं की आलोचना की तथा केंस के विचारों का ही विस्तार किया। इसे IS - LM मॉडल का नाम दिया गया। अत: IS - LM मॉडल प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों के विचारों के समन्वय का एक प्रयास है।

केंसवादी की रूढ़ियों के कारण उत्पन्न चुनौतियों का वर्णन 'नवीन क्लासिकीय अर्थशास्त्र' पदबंध के माध्यम से किया गया। नव-केंसवादी अर्थशास्त्रियों के अनुसार 'सूची लागत', 'समग्र माँग की बाह्यताएँ' तथा समन्वय असफलता के कारण कीमतों में जड़ता आ जाती है।

उपभोग व्यय और बचतें

कोई भी व्यक्ति प्राप्त आय को सर्वप्रथम उपभोग पर खर्च करता है तथा उपभोग से अधिक आय होने पर उसे भविष्य के लिए बचाता है। अत: आय उपभोग तथा बचत का योग होती है।

$$Y = C + S$$

जहां, Y = आय
C = उपभोग
तथा S = बचत है

औसत और सीमांत उपभोग प्रवृत्ति

उपभोग में आय के सापेक्ष बढ़ोतरी की प्रवृत्ति होती है। किसी भी परिवार की आय वृद्धि के साथ उसका उपभोग व्यय भी बढ़ता

www.neerajbooks.com